विजेता जागो प्रार्थना विषय- सितंबर 2024

1.**प्रार्थना**: "प्रभु यीशु, मैं आपके लिए जीने के अपने सभी व्यर्थ मानवीय प्रयासों से थक गया हूं। मैंने आपके जैसा बनने की बहुत कोशिश की है, लेकिन मैं असफल रहा हूं। इसलिए, मैं हार मानता हूं. मैं आपकी सेवा करने के अपने सभी शारीरिक मानवीय प्रयासों को बंद कर देता हूं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे अपनी आत्मा से भरें और मेरे माध्यम से अपना कार्य करें। आप में विश्राम करने के विशेषाधिकार के लिए धन्यवाद!" (मत्ती 11:28-30)

2. **प्रभुत्व** - यीशु के प्रभुत्व को पहचानना विश्वास की यात्रा का हिस्सा है। हमारे परमेश्वर यहोवा की संप्रभुता के कारण और सब कुछ उसके हाथ में है, इसलिए उसकी स्तुति और आराधना करना अच्छा है। कठिन समय में भी सारा अधिकार और शक्ति उसके हाथ में है। (भजन 117:1.2)

3. **संवेदनशीलता** - जीवन की समस्याएँ और परिस्थितियाँ मनुष्य के हृदय को इस हद तक कठोर कर सकती हैं कि उसे दूसरों को होने वाले नुकसान का एहसास ही नहीं होता। आइए प्रार्थना करें कि प्रभु हमारे दिलों की जाँच करें, जिससे पश्चाताप और पापों की स्वीकारोक्ति हो। (भजन 139:23.24)

4. **पुनर्स्थापना** - आधुनिक समाज रिश्तों में अविश्वसनीय कठिनाइयों का सामना कर रहा है, खासकर परिवारों में। प्रभु, हम विवाह और परिवारों में संतुलन के लिए प्रार्थना करते हैं। हमें ऐसे व्यक्ति बनाएं जो आध्यात्मिक और भावनात्मक उपचार और घर में सद्भाव के लिए प्रार्थना करें। (यहेज 22:30)

5. **शासक** - प्रभु, मसीही लोगों के रूप में हम सभी स्तरों पर चाहे नगरपालिका, राज्य या राष्ट्रीय अधिकारियों की ओर से मध्यस्तता करते हैं। हम चाहते हैं कि सभी क्षेत्रों में, वे आपको न्याय और समानता के साथ शासन करने वाले प्रभुओं के प्रभु के रूप में पहचानें। (1तीमु 2:1-5)

6. **कलीसिया**- प्रभु यीशु, हम कलीसियाओं के लिए आपके नाम की प्रशंसा करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि पवित्र आत्मा आपके लोगों को एक स्पष्ट और ठोस गवाही के लिए मजबूत करेगा, ताकि विश्वास अटल हो, कि आपके लोग अपने परिवेश को प्रभावित करें। (प्रेरित 4:29-31)

7. **कृतज्ञता** -आइए हम प्रार्थना करें कि लोगों को अपनी संपत्ति के प्रबंधन में बुद्धि और विवेक मिले, चाहे वह बहुत अधिक हो या कम। प्रभु प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार सक्षम करें कि वह अपने परिवारों के लिए आवश्यक जीविका प्रदान कर सके। (1तीमु 5:8)

8**. परमेश्वर के कार्य** - "प्रिय प्रभु यीशु, आपका वचन मुझे बताता है कि आपने मेरे लिए क्या किया है, और आपकी आत्मा मुझे दिखाता है कि आप मेरे माध्यम से क्या हासिल करना चाहते हैं। आप सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं, मेरी सभी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं। मुझे आप पर भरोसा करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए प्रेरित करें, ताकि आप मेरे माध्यम से अपने उद्देश्य पूरे कर सकें।" (फिलि 1:6)

9. **महान गुरु**- "हे परमेश्वर, आपका धन्यवाद, कि आपने मुझे खुद चीजों को समझने की कोशिश करने के लिए नहीं छोड़ा। आपने मुझे सभी चीजें सिखाने के लिए अपना आत्मा प्रदान किया है। मुझे आपके नेतृत्व को समझने और आपके वचनों को सुनने के लिए प्रेरित करें। मेरा नेतृत्व करें और मुझे पूर्ण सत्य में मार्गदर्शन करें। मुझे आपके दिव्य स्वभाव का भागीदार बनने की अनुमति देने के लिए धन्यवाद! (मत्ती 5:1-2)

10. **सच्ची धार्मिकता**- "प्रभु यीशु, मैं बहुत आभारी हूं कि मुझे आपकी धार्मिकता का अनुकरण करने की कोशिश नहीं करनी पड़ी क्योंकि मैं बुरी तरह असफल हो जाऊंगा। इसके बजाय, मैं आपसे मुझे अपनी आत्मा से भरने और मेरे माध्यम से अपना धर्मी चरित्र उत्पन्न करने के लिए कहता हूं। मुझे धर्म के मार्ग पर चलने के लिए शक्ति प्रदान करें। मुझे अपनी धार्मिकता से भर दें!" (मत्ती 5:6)

11. **जागने का समय** -"प्रिय परमेश्वर, मैं अचंभित था, आपके उद्देश्य से अनजान था, इस बात से बेखबर था कि आपने मसीह ने मेरे लिए क्या किया है। मैं अपने शरीर के मृत कार्यों का निपटारा कर रहा था, जबकि मुझे जीवन के नयेपन में चलना चाहिए था। मुझे जगाने के लिए धन्यवाद। मेरे जीवन में प्रकाश जलाओ. मुझे अपने प्रकाश में चलने का कारण बनाओ।" (इफि 5:14)

12. **कारण और प्रभाव**- "प्रिय परमेश्वर, आपकी कृपा सचमुच अद्भुत है! पहले आपने मुझे मसीह दिया और अब जब आप मुझमें निवास करते हैं, तो आप मुझे जीने के लिए सशक्त बनाने के लिए उपलब्ध हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे जीवन पर पूरा नियंत्रण रखें और मुझे अपनी आत्मा से भर दें। मैं वही चाहूँ जो आप चाहते हो। मेरे माध्यम से अपना कार्य पूरा करने के लिए धन्यवाद!" (फिलि 2:13)

13. **त्रुटियों की तलाश न करना** - परमेश्वर को धन्यवाद दें क्योंकि वह हमारे जीवन में त्रुटियों की तलाश नहीं कर रहा है, बल्कि उन पापियों की तलाश कर रहा है जो खुद को विनम्र करने, पश्चाताप करने और यीशु को अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में अपने जीवन में आमंत्रित करने के इच्छुक हैं। (यूहन्ना 1:12)

14. **प्रतिभाग करें** – क्या आप महान आज्ञा को पूरा करने में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं? यदि नहीं, तो प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको उसके राज्य के निर्माण सेवा में सक्रिय हिस्सा बनने में मदद करे। प्रार्थना करें कि आप, यशायाह की तरह, उसकी आवाज़ का पालन करने के लिए हमेशा तैयार रहें। (यशा 6:8)

15. **प्रेम और करुणा** - मसीह ने आपको और अन्य पापियों को बचाने के लिए अपना जीवन दे दिया। सभी मनुष्यों के प्रति उनके प्यार और करुणा के लिए आज उन्हें धन्यवाद दें और उन्हें अपने माध्यम से दूसरों से प्यार करने की अनुमति दें। (रोमि 5:8)

16. **एक अच्छा प्रबंधक** - एक दिन यीशु आपसे पूछेंगे कि आपने पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान जो संसाधन उन्होंने आपको सौंपे थे, उन्हें आपने कैसे खर्च किया। प्रार्थना करें कि प्रभु आपको शाश्वत मूल्यों को पहले स्थान पर रखने और अपनी विभिन्न संपत्तियों का एक अच्छा प्रबंधक बनने की क्षमता प्रदान करें। (मत्ती 6:21)

17. **परीक्षा में आनंद** -"हे मेरे भाइयो, जब तुम पर नाना प्रकार की परीक्षा आए तो इसे शुद्ध आनन्द समझो" (याकूब 1:2-4)। ऐसा कैसे? परीक्षाओं में आनन्दित होना मानव स्वभाव के विपरीत है! - यही तो बात है! - हमें परमेश्वर की आत्मा द्वारा फिर से जन्म लेना चाहिए। तब हम समझेंगे कि परमेश्वर हमें हमारी स्वतंत्र आत्मा से मुक्त करने और हमें अपनी ओर खींचने के लिए कठिनाइयों का उपयोग करता है।

18. **दृढ़ता का आशीर्वाद** -"धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षाओं में स्थिर रहता है, क्योंकि जब वह परीक्षा में खरा उतरेगा, तो उसे जीवन का मुकुट मिलेगा" (याकूब 1:12)। जैसे आग सोने को शुद्ध करती है, वैसे ही प्रभु समस्याओं का उपयोग प्रकट करने के लिए करते हैं और हमें छिपे हुए दोषों से शुद्ध करते हैं। अंधकार में भी प्रभु पर भरोसा रखो.

19. **प्रलोभन की उत्पत्ति** -बहानों से मत जियो. विनम्र रहें और अपने कार्य की जिम्मेदारी स्वीकार करें। "परन्तु हर कोई अपनी ही बुरी अभिलाषा के द्वारा खींचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है" (याकूब 1:14)। अपने इरादों की जाँच करने और अपनी इच्छा प्रभु को सौंपने के लिए तैयार रहें।

20**. यौन विकृति** -"प्रत्येक अच्छा और उत्तम उपहार ऊपर से है, स्वर्गीय ज्योतियों के पिता की ओर से आता है" (याकूब 1:17)। हमारी कामुकता परमेश्वर का एक उपहार है और विवाह में प्रेम के शाश्वत बंधन की अभिव्यक्ति है (उत्पत्ति 2:24)। ध्यान रहें! आज दुनिया जो भी विकल्प पेश करती है, वे और कुछ नहीं, बल्कि परमेश्वर की योजना का विकृत रूप हैं।

21. **सुनने में तेज** -"हर किसी को सुनने में तत्पर, बोलने में धीमा और क्रोध करने में धीमा होना चाहिए" (याकूब 1:19.20)। क्या आप ऐसे व्यक्ति हैं जो आसानी से क्रोधित हो जाते हैं? प्रभु से कहें कि वह आप में अपनी आत्मा का फल, अर्थात आत्म-नियंत्रण उत्पन्न करे। चुनौती स्वीकार करें और अच्छी तरह से सूचित रहें, विकल्पों पर विचार करें, विवेक के साथ बोलें और अपने गुस्से पर नियंत्रण रखें।

22. **वास्तविक ज्ञान** -"परन्तु जो ज्ञान स्वर्ग से आता है, वह सबसे पहले शुद्ध होता है; फिर शांतिप्रिय, विचारशील, विनम्र, दया और अच्छे फल से भरपूर, निष्पक्ष और ईमानदार" (याकूब 3:17)। आइए ईमानदार रहें, हमारे परिवार, चर्च और समाज को ऐसे ज्ञान वाले पुरुषों की तत्काल आवश्यकता है। इसे याद रखें और वास्तविक ज्ञानी व्यक्ति बनें।

22. **चरित्र निर्माण** -यह नहीं कि हमारे पास क्या है, न ही हम क्या करते हैं या क्या जानते हैं, बल्कि हम कौन हैं यह सबसे ज्यादा मायने रखता है। इसलिए: "सावधान रहो; विश्वास में दृढ़ रहो; साहसी व्यक्ति बनो; मजबूत बनो। सब कुछ प्रेम से करो" (1 कुरि 16:13.14)। प्रार्थना करें कि मसीह का चरित्र आपके व्यवहार और रिश्तों में प्रतिबिंबित हो।

23. **लड़खड़ाओ मत** -"यदि तू संकट के समय लड़खड़ा जाए, तो तेरी शक्ति कितनी छोटी है" (नीति 24:10)। संकट अपरिहार्य हैं. हम जीवन के अप्रत्याशित और कठिन क्षणों का सामना कैसे करते हैं यह उसके परिणाम को निर्धारित करता है। स्थिति चाहे जो भी हो, परमेश्वर के दृष्टिकोण के लिए प्रार्थना करें। अपनी कमज़ोरी में उसकी शक्ति को वास्तविक बनाने के लिए उस पर भरोसा रखें। फिर, तुम नहीं लड़खड़ाओगे।

24. **सुपर संस्कृति**– "परन्तु तुम एक चुनी हुई प्रजा, और राज-पुरोहित समाज, एक पवित्र जाति, और परमेश्वर की प्रजा हो" (1पत 2:9)। जो कोई विश्वास के द्वारा यीशु को प्राप्त करता है, उसका नया जन्म होता है और वह परमेश्वर की संतान बन जाता है। (यूहन्ना 1:12) सभी लोगों, नस्लों और राष्ट्रीयताओं के ये पुरुष, महिलाएं और बच्चे परमेश्वर के एक ही परिवार से संबंधित हैं और एक अद्भुत सुपर संस्कृति का निर्माण करते हैं!

25.**आचरण** - "तुम्हारा आचरण मसीह यीशु के समान होना चाहिए" (फिलि 2:5)। इस दुनिया के शासक के विपरीत, जो अपने लोगों पर प्रभुत्व रखता है, मसीह ने अपने शिष्यों को दिखाया कि सेवक नेतृत्व क्या होता

है। (मत्ती 20:25-28) अपने प्रति ईमानदार रहें। पवित्र आत्मा से आपके हृदय का दृष्टिकोण प्रकट करने के लिए प्रार्थना करें। मसीह को अपने जीवन में शासन करने की अनुमति दें।

26. **पवित्र जीवन** - "परन्तु जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम सब काम करते हुए पवित्र बनो" (1पत 1:15)। जब आपका परमेश्वर के आत्मा द्वारा नया जन्म हुआ, तो आपको एक नया स्वभाव प्राप्त हुआ। (गला 2:20) अब आपको परमेश्वर के लिए जीने के लिए बुलाया गया है - यही पवित्र जीवन है। प्रार्थना करें कि अपने परिवार और दोस्तों के सामने शब्दों और कर्मों से उस मसीह को प्रतिबिंबित करें जो अब आप में रहता है।

27. **विचारशील** - "वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से अपनी पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जान कर उसका आदर करो" (1पत 3:7)। थोपने और स्वार्थी होने के बजाय, मसीही पतियों को अपनी पत्नियों के साथ गरिमा और सम्मान के साथ व्यवहार करने के लिए कहा जाता है। सबसे अच्छा उपहार जो हम अपने बच्चों को दे सकते हैं वह है जब हम उनकी माँ से प्यार करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं।

28. **सब बातों में** - "और हम जानते हैं कि परमेश्वर सब बातों में अपने प्रेम रखनेवालों की भलाई के लिये ही काम करता है" (रोम 8:28)। प्रभु की आशीष अक्सर हमारी आँखों से छिपी रहती है। कभी-कभी, जब वह हमारे चरित्र पर काम करता है, तो वह पीड़ा और दर्द का उपयोग करता है। उनकी योजनाएँ हमेशा हमें समृद्ध बनाने की योजनाएँ होती हैं, न कि हमें नुकसान पहुँचाने की। (यिर्म 29:11). इसलिए, चाहे कुछ भी हो, हमेशा उस पर भरोसा रखें।

29. **युद्ध की अफवाहें** - "आप युद्धों और युद्धों की अफ़वाहों के बारे में सुनेंगे, लेकिन ध्यान रखें कि आप चिंतित न हों। ऐसी बातें अवश्य घटित होंगी, परन्तु अंत अभी भी आना बाकी है" (मत्ती 24:6)। हमारी दुनिया में तनाव और सशस्त्र संघर्षों का बढ़ना यीशु मसीह की आसन्न वापसी के संकेत हैं। इसलिए, अपना ध्यान उसके आगमन पर तैयार रखने और विश्वासयोग्य पाए जाने पर केंद्रित करें।

30. **अंत तक दृढ़** - "दुष्टता बढ़ने से अधिकांश का प्रेम ठंडा हो जाएगा, परन्तु जो अन्त तक स्थिर रहेगा, वही उद्धार पाएगा" (मत्ती 24:12)। हमारी दुनिया में वास्तविक संघर्ष आध्यात्मिक प्रकृति का है। बुराई की ताकतें दुष्ट झूठ और विचारधाराओं से मानवता पर हावी हो रही हैं। ध्यान रहें! परमेश्वर के वादों पर दृढ़ रहें।